This question paper contains 3 printed pages. Roll No. .....

205-I

B.A./B.Ed. (Four Year) (Part-II) Examination – 2024

B.A-B.Ed. 05/06/07 (G-B)

हिन्दी साहित्य – I

प्रथम प्रश्न पत्र : रीतिकाल

Time: Three Hours **Maximum Marks: 100**

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर–पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर लिखें।

किसी भी एक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के उत्तर, उत्तर–पुस्तिका में अलग–अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर हल कीजिए।

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न–पत्र पर अपना रोल नम्बर अवश्य लिखिए।

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक सामने अंकित हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए – **(10×4=40)**

(क) राम कौ काम कहाँ? रिपु जीतहिं, कौन कबै रिपु जीत्यौ कहाँ?
बालि बली, छल सों, भृगुनंदन गर्व हर्यो, द्विज दीन महा।।
दीन सु क्यौं? छिति छत्र हत्यौ बिन प्राणनि हैहयराज कियो।
हैहय कौन? वहै बिसर्यो? जिन खेलत ही तुम्हैं बांधि लियो।।

अथवा

दृग उरझत टूटत कुटुम जुरत चतुर–चित प्रीति।
परति गाँठि दुरजन हियै, दई नई यह रीति।।
तैत्री–नाद कवित्त–रस, सरस राग, रति रंग।
अनबूड़ै बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग।।

(ख) जब तें कुँवर कान्ह! रावरी कला निधान,
कान परी वाके कहूँ सुजस कहानी–सी।
तब ही ते 'देव' देखी देवता–सी हँसती–सी,
रीझती–सी खीझति–सी रूसति रिसानी–सी।
छोही–सी छली–सी छीनलीनी–सी छकी–सी छीन,
जकी–सी टकी–सी लागी थकी थहरानी–सी।

ruoldpapers.com

अथवा

साजि चतुरंग बीर रंग में तुरंग चढ़ि
सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत हैं।
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के
नदी–नद मद गब्बरन के रलत हैं।।
ऐल–फैल खैल–भैल खलक मैं गैल–गैल,
गजन की ठेल–पेल सैल उलसत है।

(ग) अंतर उदेग दाह, आँखिन प्रबाह आँसू,
देखी अटपटी चाह भीजनि दहनि है।
सोयबो न जागिबो हो, हँसिबो न रोयबौ हू,
खोय–खोय आप ही मैं चेटक लहनि है।
जान प्यारे प्राननि बसत पै आनंदधन,
बिरह विषम दसा मूक लौं कहनि है।

अथवा

गोरस सुढौरी लिये संभु ताको मत दिये,
आपुन अकेलो संग गौरी तिहि लोग ना।
बरुनी विभूति बार–बार लै–लै मुख लावै,
उरहू लगावै पुनि भावै कछु भोग ना,
अधारी लै धोरै धरी संपत्ति धतूरा भरी,
वृषभ लै चलै जाय कोऊ ताको सोग ना।

(घ) फूलन में केलि में कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलित–कलीन किलकंत है।
कहै पद्माकर पुरागन में पौनहूं में,
पातन में पिक में पलासन पगंत है।
द्वारे में दिसान में दुनी में देस–देसन में,
देखौ दीप–दीपन में दीपत दिगंत है।

अथवा

राखति न दोषै पोषै पिंगल के लच्छन कौं
बुध कवि के जो उपकंठ ही बसति है।
जाए पद मन कौं हरष उपजावति है
तजै को कन रसै छन्द सरसति है।।
अच्छर है विशप करति उषै आप सम
जातैं जगत की जड़ताऊ बिनसति है।।

ruoldpapers.com

2. केशवदास की संवाद कला पर सोदाहरण विचार कीजिए। (15)

अथवा

बिहारी के श्रृंगार संबंधी दोहों की विशेषता बतलाइए। (15)

3. देव की कविता के काव्य सौष्ठव को उदाहरण सहित समझाइए। (15)

अथवा

रीति मुक्त काव्य धारा में घनानन्द का स्थान निर्धारित कीजिए। (15)

4. रीतिकालीन कवियों में भूषण का वैशिष्ट्य बतलाइए। (15)

अथवा

पद्माकर के श्रृंगार वर्णन को स्पष्ट कीजिए। (15)

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए – (2×7½=15)

(क) आलम का काव्य वैशिष्ट्य

(ख) सेनापति का प्रकृति वर्णन

(ग) रीतिबद्ध प्रमुख कवि और उनके ग्रंथ

(घ) रीतिकालीन नीति कविता

---

ruoldpapers.com